SJIF Impact Factor - 5.67 E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक
प्रोफेसर रजनी शिखरे
प्राचार्य
र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई
जि. बीड महाराष्ट्र

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रा.संतोष नागरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

Sr.No	*Title of the Paper*	Author's Name	Pg.No
25	हिंदी फिल्मों का विमर्शोन्मुख परिदृश्य	डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले	87
26	आजादी के 75 वर्ष का कहानी साहित्य	प्राजक्ता नानासाहेब देशमुख डॉ ललिता राठोड	91
27	आझादी के 75 वर्ष का हिंदी काव्य	प्रो.डॉ.पाटील पी.एस. प्रा.प्रकाश आनंदा लहाने	95
28	संघर्ष : अस्तित्वमूलक संघर्ष की कथा (स्त्री और दलित विमर्श के विशेष संदर्भ में)	डॉ. राजश्री लक्ष्मण तावरे	101
29	आजादी के 75 वर्ष और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना काव्य	प्रो. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	104
30	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी काव्य (संदर्भ भूममंडलीकरण में नारी)	प्रा.डॉ.बी.व्ही.राख	108
31	स्वयं प्रकाश का नाटक 'फिनिक्स' में मार्क्सवादी चेतना	प्रा. रामहरि काकडे	110
32	आजादी के 75 वर्ष के उपन्यास साहित्य में संजय कुंदन का योगदान	डॉ. रविंद्र जाधव	114
33	हिंदी साहित्य में नारी की स्वतंत्रता	चाळक संदीप संपतराव	116
34	'दिल्ली दरवाजा' उपन्यास में महानगरीय जीवन का चित्रण	प्रा. वैशाली प्रमोद अहिरे	118
35	21 वी सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श"	भावना प्रकाश पाटील	120

AMRJ

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

SJIF Impact- 5.67

January 2023 Special Issue 07 Volume III (A)

31

स्वयं प्रकाश का नाटक 'फिनिक्स' में मार्क्सवादी चेतना

प्रा. रामहरि काकडे

सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)

महिला महाविद्यालय, गेवराई, जिला - बीड

मार्क्सवादी लेखक स्वयं प्रकाश का नाटक 'फिनिक्स' का प्रथम प्रकाशन सन 1980 ईमें धरती प्रकाशन .. बीकानेर से हुआ था। यह समय जनवादी लेखन के उभार और उफान का समय था। जगहजगह से जनवादी प्रगतिशील लघु पत्रिकाओ का प्रकाशन हो - रहा था।'इफ्टा' फिर से सक्रिय हो गई थी। वामपंथी विचार नवजवानी की आवश्यकता जैसा बन गया था। इसका प्रधान लक्ष्य था साम्राज्यवादी एवं पूँजीवादी सत्ता का विरोध करना। फिनिक्स' एक पौराणिक पक्षी है जिसकी उम्र बहुत लंबी होती है वह आसमान में बहुत ऊंचा उड़ता है। इतना कि कहीं लोगों को दिखाई भी नहीं देता और जब उसकी आयु पूरी हो जाती है तो जमीन पर गिरने से पहले ही वह आग के गोले में तब्दील हो जाता है। और आग के गोले से ही एक नया फीनिक्स जन्म लेता है।"[1] 'फीनिक्स' तीन अंकों के माध्यम से अपने पात्रों एवं रचनाओं के आधार पर धर्म, राजनीति, भ्रष्टाचार, चाटुकारिता, वर्ग एवं वर्ण आदि बिंदुओं को उजागर कर अन्यायकारी सत्ता के विरोध में खड़ा होता है। नाटक के पात्र एवं घटनाएं प्रतीकात्मक है। नाटक में जीवन की रोजमर्रा की घटनाओं और पात्रों को आधार बनाकर अन्याय और अत्याचारी सत्ता के विरोध में आवाज उठाई है।

वर्तमान समय में संप्रदायवाद, भ्रष्टाचार एवं चाटुकारिता अपने उफान पर है। अभिव्यक्ति की आजादी एवं लोकतंत्र के लिए कठिन समय में यह नाटक अंधेरे के खिलाफ खड़ा होने की कोशिश है। नाटककार को इस नाटक की प्रेरणा शमशेर की लंबी कविता 'वाम वाम दिशा समय साम्यवादी' से मिली है। वे लिखते है कि, "इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि, समाज में असमानता और जिस अनुपात में सामाजिक अन्याय बढा है उसी - यानी अधर्म कम होने की बजाय बढा है - शोषण और विषमता - अन्याय - अनुपात में मुक्ति की आकांक्षा भी बढी है।"[2] नाटक का प्रमुख पात्र बाबू फिनिक्स का प्रतीक है। बाबू दमनकारी व्यवस्था के विरोध में है तथा इस व्यवस्था के विरोध में विद्रोह करना चाहता है। लड्डू प्रतीक है चेतना का। जो बाबू के द्वारा लड़का -, शायर, साहब आदि में रूपांतरित होती है। धर्माचार्य, प्रधान सेनापति तथा प्रधान सचिव ऐसे लोगों के प्रतीक हैं जो व्यवस्था के लिए आम लोगों का शोषण करते हैं। राजा व्यवस्था का प्रमुख है जिसके नाम से सभी गलत काम किए जाते हैं। माधो उस सुविधा भोगी मध्यवर्ग का प्रतीक है जो सब जान बूझकर भी अपनी सुविधाओं के लिए दमनकारी व्यवस्था के लिए कार्य करते हैं। वह अपनी सुविधाओं के लिए शोषणकारी सत्ता का हथियार बनकर काम करने के लिए विवश है। स्त्रियां प्रतीक है उस व्यवस्था की जो व्यवस्था आम व्यक्ति को कभी दिखाई नहीं देती और अपने हित के सभी निर्णय प्रमुख के द्वारा लेती है। उसे कठपुतली की तरह नचाती है।

प्रथम अंक में बाबू सड़क पर लड्डू बाँटते पकडा जाता है। इस घटना में पुलिस के माध्यम से दमनकारी सत्ता के सैनिकों का बर्ताव चित्रित किया गया है। जो सत्ता के चाटुकार है तथा अपने मालिक को खुश करने के लिए किसी भी हद तक गिर सकते हैं। "पुलिस -3 : कानून? तुम कानून की बात करता है? जानता है कानून किसे कहते हैं? कभी थाने में आना बताएंगे। कानून क्या होता है। यह डंडा देखा है ----? यह है कानून। और ये आप लोगों ने नहीं बनाया। और यह आप लोगो.को सीधा रखने के लिए है।"[3] कुछ समय बाद उसी मार्ग पर जब राजा की सवारी जा रही होती है तब वहीं पुलिस राजा की सवारी ढोने लगते हैं। जिसे देखकर लड़का और आदमी उसे पकड़कर खिचते है। जिससे पालकी गीर जाती है और राजा टेढे लटक जाते हैं। पुलिस सभी के साथ मारपीट करती है। द्वितीय अंक में बाबू, लड़का, मास्टर, शायर और साहब अस्पताल में है। अस्पताल की नर्स आर्थिक विवंचना के कारण डॉक्टर के अत्याचार सहती ही। जिससे उसके व्यवहार में कड़वाहट स्पष्ट दिखाई देती है। जब वह सच की बात करती है तब डॉक्टर उसकी हत्या कराना चाहता है। डॉक्टर दमनकारी सत्ता से मिला हुआ है। जबजब इन विद्रोहियों का हालात जानने पत्रकार आते हैं - तब पुलिस अफसर और डॉक्टर इस घटना को बगावत घोषित करते हैं। "डॉक्टरऔर ये साहब विदेश विभाग में बाबू है। दूतावासों में : आना जाना है। इन पर शक है कि इन्हीं ने षडयंत्र के लिए विदेशी सहायता का इंतजाम किया था। डिप्लोमैसी बहुत आती है। एक्शन वारदात से खिसक लिये। - ए - शुरू होने से पहले ही मौका"[4]

दमनकारी सत्ता को जब विरोधियों से खतरा महसूस होता है। तब वह विरोधियों को देशद्रोही घोषित करती है। "---द केस इज वैरी सिम्पल। कुछ लोगों ने महाराज सरकार के खिलाफ बगावत करने की बात सोची या योजना बनाई। यह जो लोग थे जिन्हें इस मुल्क की सुख शांति -, अमन चैन -, कायदा यह --- कानून -ा तक कि संविधान तक पसंद नहीं।इन्होंने किसानों से कहा तुम ---

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

भूखे हो, हालाँकि तुम ही अनाज उगाते हो। उन्होंने मजदूरों से कहा कि तुम्हारी मेहनत की कमाई कारखानेदार लूट रहा है। वह लखपति से करोड़पति हो रहा है और तुम गरीब से कंगाल। लेकिन यह मजदूरों को भड़काने वाली बात थी।"[5] यहां तक कि दमनकारी सत्ता एवं उसके हस्तक आम जनता की अभिव्यक्ति को भी खत्म करते हैं। भ्रष्टाचारी और व्यभिचारी राजा के विषय में बात करना भी देशद्रोह मानते हैं। सच उजागर करने वाले पत्रकार को भी जेल में बंद किया जाता है। क्योंकि सत्ता को यह डर सताता है कि अगर असलियत छपकर आई तो जनता को सच मालूम होगा और गांव में दंगे भड़क जाएंगे। इसलिए सत्ता के दलाल सभी मीडिया पर अपना नियंत्रण रखते हैं।

तृतीय अंक में तीनों सियाँ व्यवस्था की प्रतीक है। जो अत्यंत निजता की अश्लील बातें करती है और व्यभिचारी राजा उनकी बातें सुनने में ही समय बिताता है। "महिला -1 : मीरा भी खूब है। पता है यहां तक वैक्सिंग करवाती है। महिला (कमर पर हाथ रखकर) --- -3 : नोप्रॉमिस !? महिला -1 : प्रॉमिस!"[6] राजा इन बातों में इतना व्यस्त है कि, प्रधान सचिव द्वारा राज्य की खराब स्थिति का बयान करने पर भी ऐसे उटपटांग आदेश देता है कि जिस पर अमल ही ना हो सके। राजा इस कदर कर्तृत्वहीन है कि राज्य में घटित घटनाओं से पूरी तरह अनभिज्ञ है। प्रधान सेनापति द्वारा उसे गलत जानकारी प्रदान की जाती है। "पत्रकार -2 : बाबू भाई, आपको ताज्जुब होगा, यह बात महाराज से भी छिपायी जा रही है। उन्हें कुछ नहीं मालूम पड़ने दिया जाता। मुख्य सेनापति खुद सारा – – –।"[7]

तृतीय अंक में नाटक अपने कथ्य को एक उच्च बिंदु पर प्रतिष्ठित करने में सफल होता है। दमनकारी व्यवस्था में हर कोई जिस व्यवस्था की दुहाई देता है वही व्यवस्था तिनों स्त्रियों में दृष्टिगत होती है। तिनों स्त्रियां उस सर्वोत्तम सत्ता तंत्र की प्रतीक है जो सभी व्यक्ति, वस्तु एवं व्यवस्थाओं को अपनी सुविधा के लिए अपनी सुविधा के अनुसार इस्तेमाल करती है और जिसे धर्म, राष्ट्र आदि नामों से पुकार कर आम जनता को भ्रमित करती है। यह व्यवस्था कभी भी सामान्य जनता को दिखाई नहीं देती या समझ नहीं आती है। स्त्रियां जिस विषय पर बातचीत करती है वह विषय न राज्य हित में है, ना समाज हीत, ना जनहित में। इतना ही नहीं तो यह व्यवस्था अपने मायाजाल में सभी को फंसा कर सत्ता के शीर्ष पर बनाए रहती है। अगर कोई राजा अथवा अन्य उनके हीत विरोध में निर्णय लेते हैं तो वह अपने तरीके से उस प्रयास को असफल बनाती है। इसके लिए सभी भौतिक सुविधाओं का सहारा लेती है। कभी धर्म का तो कभी षडयंत्र का।

"महाराज जनता के लये :...
(सब महिलाएं झुककर बड़े ध्यान से देखने सुनने लगती है।जनता के लिए कुछ रियायतों का ऐलान कर दो। ऐलान कर दो कि (...
महिला -1:
महिला -2:
महिला -3: (जोर से, और तेजी सेकच - कच (, कच कच -, कच कचकचकच -, कचकच, कचकच।
महाराज नहीं ठहरो। हम फिर सोचेंगे। हाँ :, जनता से कहो... बचत करो।
(महिलाएं राहत की सांस लेकर फिर बातचीत में मशगूल हो जाती है।")[8]

अर्थात महिलाएं उस व्यवस्था की प्रतीक है जो जनहित के निर्णय नहीं होने देती। महत्वपूर्ण बात यह है कि, महिलाएं अर्थात व्यवस्था के लिए काम करने वाले राज्य की सभी व्यवस्थाएं व्यवस्था की असलियत जनता से छुपाए रखते हैं। तभी तृतीय अंक के केंद्र में दरबार के दृश्य में जब आदमी को लाया जाता है तब धर्माचार्य और मुख्य सेनापति दौड़ कर महिलाओं को छुपाते हैं। इस व्यवस्था की शक्ति इतनी अधिक है कि वह सामान्य घटनाओं से बिल्कुल भी विचलित नहीं होती। क्योंकि उसका ना चेहरा है ना रूप। राज्य की धर्म व्यवस्था व्यवस्था तथा प्रशासन व्यवस्था उसके लिए ही तो काम करती है। इसलिए यह व्यवस्था निश्चिंत है। यह व्यवस्था राजा को अपनी कठपुतली बनाकर अपना खेल खेलती रहती है। धर्म, जाति, वर्ग, अज्ञान, एवं अंधश्रद्धा उनके कठपुतलियों की डोरियां है जिसका इस्तेमाल समयानुसार कर वह जनता के साथ खेलती है। समय अनुसार अपनी जगह भी बदलती है। यह सत्ताधारी दल और विपक्षी दल के समान ही है, जो सत्ता में रहने पर एक बात और विपक्ष में जाने पर एक बात करते हैं।

नाटक का राजा निहायत भ्रष्टाचारी, व्यभिचारी पापभिरु तथा डरपोक है। वह अपनी सुविधा के लिए व्यवस्था से मिला हुआ है। वह धर्माचार्य एवं प्रधान सेनापति के निर्णय पर निर्भर रहता है। क्योंकि उसमें कोई क्षमता नहीं है। वह व्यवस्था से मिलकर ही सत्ता पर बना रह सकता है। वह अपनी सुविधा एवं सत्ता के लिए एक से बढ़कर एक गलत निर्णय लेता रहता है। वह व्यवस्था में इस तरह से फंसा है कि, चाह कर भी उससे बाहर नहीं निकल सकता। तभी तो वह राज्य की जनता के लिए कुछ रियायतों का ऐलान करना चाहता है। तभी तिनों स्त्रियों की कच कच -, कच देता है कच आवाज आती है और राजा अपना निर्णय बदल -। सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर बैठे लोग व्यवस्था की जंजीरों से बंधे होते हैं। वह व्यवस्था की कठपुतली मात्र रहते हैं। जब यह कठपुतली ठीक से काम नहीं करती तब या तो डोरियां बदली जाती है या कठपुतली।

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

"महिला -2 : (डोरी खींचकर गर्दन इधरदेखेगा वह क्या (उधर घूमते हुये- यह मैं तय करूंगी।
महिला -3 : (डोरी से हाथ उठाते हुए वह क्या करेगा यह मैं तय करूंगी। (गिराते हुए -
महिला -1 : (महाराज का पैर नचाते हुये(वह कहां जायेगा यह मैं तय करूंगी।
महिला -2 यानि सब कुछ हम तय करेंगे।"[9] अर्थात राजा सर्वोच्च न होकर तिनों स्त्रियाँ ही सर्वोच्च है। स्त्रियाँ राजा को जीन डोरियों से नचाती है व समकालीन समाज के विभिन्न मुद्दे है। जिसके सहारे आदमी को बहलाया अथवा भ्रमित किया जाता है।

प्रधान सेनापति और धर्माचार्य व्यवस्था के पोषक है। वह भले ही अपना अलग अस्तित्व रखते हो पर काम तो व्यवस्था के लिए ही करते हैं। वे सामान्य व्यक्ति को स्त्रियों का अस्तित्व दिखने नहीं देते। जब भी दरबार में आदमी का प्रवेश होता है तब धर्माचार्य और प्रधान सेनापति स्त्रियों को ढक लेते हैं और आदमी के जाते ही हट जाते हैं। धर्माचार्य धर्म के नाम पर लोगों को भयभीत कर उनकी विचार शक्ति क्षीण करते हैं तथा राजा को कर्मकांड में व्यस्त रखते हैं। जिससे राजा का स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण न हो और व्यवस्था में परिवर्तन न हो। प्रधान सेनापति भी राज्य में घटित घटनाओं एवं आने वाले संकटों की जानकारी राजा से छुपा कर रखता है। धर्माचार्य एवं प्रधान सेनापति काम तो व्यवस्था के लिए करते हैं परंतु राजा को लगता है यह मेरे लिए काम करते हैं और मैं राजा हूं।

नाटक में मध्यवर्ग की विवशता एवं स्वार्थ को चित्रित किया गया है। माधो और नर्स मध्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। जो सब जानबूझकर भी अनजान रहते हैं। वह अपनी भौतिक सुविधा खोने का डर और यातनाओं के डर के कारण स्वयं को सीमित दायरे में बांध रखते है। माधो को बारबार लगता है कि-, यह शोषण व्यवस्था गलत है, तथा वह गलत काम करता है। लेकिन उसे डर है कि, उसने विद्रोह किया तो उसे पुनः निम्न स्तर का जीवन यापन करना होगा। इसलिए चाहते हुए भी वह सच का साथ नहीं दे पाता।

"गीत -
'पृष्ठभूमि का विरोध, अंधकार लीन
व्यक्ति कुहाS... स्पष्ट, हृदय भाव आज हीन
हीन भाव, हीन भाव
मध्यवर्ग का समाज हीन!"
माधो ये झूठ है। (अचानक उठकर) :

अर्दली -1 और अर्दली -2 संगीने तान कर माधो को घेर लेते है और और हैंड्स अप कराकर मुख्य सेनापति के सामने - ले जाते है। महिला2 मुख्य सेनापति को एक थैली देती है। मुख्य सेनापति उसमें से एक निहायत मैला कुचेला -, तार तार कुर्ता - निकालता है जिसे देखकर माधो घबरा जाता है। अर्दली -1 और अर्दली -2 पीछे हट जाते है। मुख्य सेनापति कुर्ता फैलाकर माधो की तरफ बढ़ाता है। माधो पीछे हटता है.... माधो नहीं। मै वह कुरता फिर नहीं पहनूँगा। मुझे वह फिर मत पहनाओ। (घबराकर) - मुझे..."[10] नर्स भी अपने चार बहनें और एक भाई की परवरिश करने की विवशता के कारण डॉक्टर का अत्याचार सहती है।

यह कृति सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध रचना है। वामपंथी विचारों की प्रवाहक है। बाबू, लड़का, शायर, साहब और पत्रकार दमनकारी सत्ता के विरोध में लड़ने वाले पात्र है। बाबू फीनिक्स का प्रतीक है। जिसका कोई अंत नहीं होता। वह दमनकारी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह करता है। लड्डू प्रतीक है विद्रोही चेतना का। तभी तो लड्डू से पुलिस से राजा तक सभी डरते है। बाबू व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाने वाला फिनिक्स है का प्रतीक है। जिसका कभी अंत नहीं होता है। यह दमनकारी सत्ता बाबू एवं अन्य को अपार यातनाएं देती है। उन पर आरोप लगाया जाता है कि वे किसानों मजदूरों के हक की बात करते है। वे राजा की असलियत लोगों के सामने लाने का प्रयास करते है। क्रांतिकारी चेतना से युक्त बाबू एवं उनके सहयोगियों से सत्ता डरती है। बाबू सत्ता एवं उनके दलालों का असली चेहरा पहचानता है तथा उनसे कैसे लड़ना यह भी जानता है। नाटक के अंत में बाबू, मास्टर, शायर, लड़का और साहब को दरबार में लाया जाता है। महिलाएं लडके को नग्न कराकर उसके निचले भाग पर बिजली का तार छुआती है। किंतु महाराज क्रांति की चिनगारी बाबू से डर रहे है। -

"महाराज यह बहुत खतरनाक है। इसे कसकर पकडे रखो। !इसे छोडना मत (पते हूँयेकाँ) :
किंतु उधर
आगे आगे चलती है -
लाललाल-
वज्रकठिन कम कर की मुट्ठी में
पथप्रदर्शिका मशाल!"[11]

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (A) SJIF Impact- 5.67

महाराज बाबू को फांसी की सजा सुनाते है और और बाबू को फांसी दी जाती है। जिससे महिलाओं सहित सभी चैन की सांस लेते है। तभी खबर आती है कि, वही आदमी चौराहे पर लड्डू बाँटता हुआ पकड़ा गया है। जिससे सुनकर धर्माचार्य और महाराज डर जाते है। प्रस्तुति नाट्यकृति सामाजिक रुप से प्रतिबद्ध रचना है। अपने कथ्य से वामपंथी विचारों की प्रवाहक रचना है। जिसका उद्देश्य साम्राज्यवादी एवं पूँजीवादी सत्ता के शोषण तंत्र को उजागर कर उसका विरोध करना है। यह पूंजीवादी व्यवस्था मनुष्य की आत्मा का शिकार कर उसे एक मशीन के समान बनाती है। नाटक का मुख्य पात्र बाबू सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है। जो फीनिक्स के समान कभी समाप्त नहीं होता। उसके अंत से ही उसका जन्म होता है। इसलिए तो बाबू को फाँसी देकर भी साम्राज्यवादी एवं पूंजीवाद सत्ता के विरोध में दूसरा बाबू फीनिक्स बनकर उपस्थित होता है।

संदर्भ सूची

1. नाटक की भूमिका से
2. नाटक की भूमिका से
3. नाटक फिनिक्स पृ .क्र .20
4. नाटक फिनिक्स पृ .क्र .30
5. नाटक फिनिक्स पृ .क्र .32
6. नाटक फ़िनिक्स पृ.क्र . 49 - 50
7. नाटक फिनिक्स पृ.क्र . 40
8. नाटक फिनिक्स पृ.क्र . 54
9. नाटक फिनिक्स पृ.क्र . 59
10. नाटक फिनिक्स पृ.क्र . 63 - 64
11. नाटक फिनिक्स पृ.क्र . 67

AMRJ